Sh.
109

मार्तण्ड ब्राह्मण - वेद

8, 11, 22 सम.
7x5

~~वैतालिकन्यायमाला~~

221.5
मार्त

8- पृ०

~~परि० सं० 1313~~

~~8169~~

योगिनी लोकार्थ वर्णन

परि० सं० 1312 (92)

(गुरुमुखी लिपि)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

पी·सं· 4218 मार्तण्ड ब्राह्मण

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दृष्टैत्र तत्पुरुषत्वं चणितुर्यैकत्र सिसुखस्य प्रसुस्त्वत्वमः प्रवसिसुत्रसी
सानित शीटेवदि निमित्तमा तत्वे मलिनः धृगे: मवकस मुणादितः
तेमत्रा विषयं सुक्रयाणामिकस मा। मलिनेमतधिमूरुकं रत
मत्राङ्केधियं पितत्रासुखिमाय्यानि सत्कल्पेन संसयः पावलसा
पमलिनवत्वयेत धियंतरु शुद्ध मलिनान्नि वितत: कांदन सं
सयः समवान्तरात्वे सत्र मलिनस्य समानमः सुङ्कं रहा विणेन
पित: शुद्धसमानत्वात्। मलिनोपपत्तेः वितत्र सत्र समानस शुद्धु
समानस्य शुद्धिविन समसितः शुद्धेवधेतस धृगे वेसतत्वि
सावत: साह्ं सं टसहस विवयतं तसमास्तत्। सुणसायधतेती

मा॰ तृ॰
मा॰
०८

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]